पेरिस
३१ दिसम्बर, २००५

संदेश संख्या – ८६

ब्रह्मसूत्र

''ब्रह्मसूत्र'' में ५५५ सूत्र हैं जो चार अध्यायों में वितरित हैं तथा प्रत्येक अध्याय में चार खण्ड हैं ।

	खण्ड–१	खण्ड–२	खण्ड–३	खण्ड–४	कुल
अध्याय–१	३१	३२	४३	२८	१३४
अध्याय–२	३७	४५	५३	२२	१५७
अध्याय–३	२७	४१	६६	५२	१८६
अध्याय–४	१९	२१	१६	२२	७८
			५५५		

५५५ वाकई, एक जादुई संख्या है ।

पृथ्वी के जिस हिस्से को अब भारत कहा जाता है, वहाँ प्राचीन काल में लोगों ने शरीरी चेतना एवं अशरीरी चैतन्य के बारे में गहन अन्वेषण किया था। उनके ध्यानशील अन्वेषण के कई आयाम थे जिससे कई मूल–पाठ और धर्मग्रंथों का जन्म हुआ । उनसे प्रकृति और ब्रह्माण्ड (सृष्टि) के संबंध में कर्मकाण्ड के साथ–साथ गहन आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि भी उत्पन्न हुई। श्रद्धेय आचार्यों के मार्गदर्शन में दर्शन की गई विचार धाराएं उत्पन्न हुईं । बाद में, ज्ञान के विशाल भंडार को व्यवस्थित करने के लिए तथा कई विषयों पर लम्बी चर्चाओं को याद करने हेतु सहायक के रूप में सूत्र–साहित्य का विकास हुआ। संरक्षण हेतु संदेशों एवं विशाल ज्ञान के भण्डार को अत्यन्त संक्षिप्त कर दिया गया परिणामस्वरूप, ज्ञान को इन सूत्रों में कम से कम संभव शब्दों में संक्षिप्त करने का प्रयास किया गया। लेकिन तब संक्षिप्तता का इस हद तक पालन किया गया कि अधिकांश सूत्र दुर्बोध और पहेली बन गए। और तब, व्याख्याता और विद्वान आए जिन्होंने सदियों–सदियों तक दर्शन की विभिन्न धाराओं और साथ–साथ अपने मतों, मताग्रहों, वाद–विवादों और समीक्षाओं का सृजन किया । तथापि, ब्रह्म–सूत्रों के ऊपर मुख्य टीकाएँ (व्याख्यायें) आदिशंकराचार्य, रामानुज और निम्बार्क की हैं ।

ब्रह्मसूत्र बादरायण द्वारा रचित हैं। अष्टावक्र की तरह, बादरायण के बारे में तथा इन सूत्रों की उत्पत्ति के संबंध में अत्यन्त रुचिकर कहानी है। जिस तरह रिट्रीटों में शिवेन्दु अष्टावक्र की कहानी कहते हैं तथा भाग लेने वाले उसका अत्यधिक आनन्द लेते हैं, वैसे ही, यदि यह संदेश भविष्य में होने वाले किसी रिट्रीट का हिस्सा बने तो संभव है कि बादरायण की कहानी का भी सभी रसास्वादन कर सकेंगे ।

वैज्ञानिक सत्य की पुनरावृत्ति उपयोगी है । इससे तकनीक विकसित होती है । राजनीति में झूठ की पुनरावृत्ति अत्यंत हानिकारक होती है क्योंकि तब प्रचार के कारण झूठ सच प्रतीत होने लगता है । राजनीतिज्ञ तब सभी चीजों पर नियंत्रण हेतु सत्ता में आ जाते हैं । मानसिक एवं गहरे आध्यात्मिक संदर्भों में व्यक्ति को स्वयं के लिए स्वयं प्रकाश बनना पड़ता है ।

सत्य अवधारणाओं, निष्कर्षों, विचारों या व्याख्याओं पर आश्रित नहीं होता । आप जहाँ हैं, यह वही है, आपके दैनिक जीवन में है, आपके तनाव एवं प्रलोभनों में है । यह ब्रह्म–सूत्र में नहीं है । ब्रह्म–सूत्रों की व्याख्याओं को पढ़कर यदि आप समझते हैं कि आप ब्रह्म–ज्ञानी हैं तो यह आत्मप्रक्षेपित महिमामण्डन ही है । ऐसा सोचना अपरिपक्वता का परिचायक है तथा जीवित और स्नेही लोगों के प्रति अन्याय है ।

आदिशंकराचार्य द्वारा सभी ५५५ ब्रह्म–सूत्रों का सार तत्व एक पंक्ति में बताया गया है :–

''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरा :''। अर्थात् निर्मन (सर्वव्यापक चैतन्य) यथार्थ है, मन मिथ्या है। अभिव्यक्त और अनभिव्यक्त की सम्पूर्णता ही जीवन है । वहाँ दो नहीं है ।

उपर्युक्त सार–तत्व के ऊपर क्रियायोग के स्वाध्याय, तप तथा ईश्वरप्रणिधान के आयामों में विचार करें और अपने लिए सत्य का पुनराविष्करण स्वयं करें । इसे स्वयं जानें । इस संबंध में उधारी ज्ञान के चक्कर में न पड़ें ।

क्वांटम भौतिक विज्ञान बताता है कि क्वार्क (मूल कण) जो दिखता है, वह वस्तुतः कम्पन है, होलोग्राम जैसा और

इस तरह जो ठोस प्रतीत होता है वह भी माया अर्थात् भ्रांति ही है ।

लेकिन विश्वास पद्धतियों के साथ–साथ पुरोहितों और राजनीतिज्ञों की सभी तरह की मगज–धुलाई बिल्कुल ही सही प्रतीत होती है । इसलिए मरने–मारने के लिए हम तैयार हो जाते हैं तथा इसे विभिन्न तरीकों यथा पुरोहितों के धर्मशास्त्रों द्वारा और राजनीतिज्ञों के राष्ट्रवाद, पूँजीवाद, समाजवाद तथा इसी तरह के कई बकवासों द्वारा न्यायसंगत सिद्ध करते हैं। यही सब हमारे जीवन का प्रयोजन और अर्थ माना जाता है।

प्रज्ञानं ब्रह्म	:	सचेतनता जागृति है ।
अहं ब्रह्मास्मि	:	यथार्थ 'मैं' जागृति है ।
तत्वमसि	:	यथार्थ 'तुम' जागृति हो ।
अयमात्मा ब्रह्म	:	सभी चीजों का सार जागृति है ।

जय आदिशंकराचार्य ।